कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका

देश की आजादी के बाद नारी शक्ति बड़ी तेजी से जागृत हुई है। अभी तक उसने पुत्री, बहन, पत्नी और माँ की भूमिका बखूबी निभाई थी किन्तु अब उसने एक कामकाजी महिला की भूमिका भी स्वीकार की है। बदलते वक्त ने महिलाओं को आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक रुप से सशक्त किया है और उनकी हैसियत एवं सम्मान में वृद्धि हुई है। इन सबके बावजूद अगर कुछ नहीं बदला है तो वह है महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारी। एक तरफ नारी होने के नाते उन्हें संस्कृति द्वारा निरूपित घरेलू भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है तो दूसरी तरफ नौकरी से संबंधित दायित्वों एवं कर्तव्यों को भी निभाना पड़ता है।

एक कामकाजी महिला किन–किन समस्याओं से गुजरती है तथा वह किस तरह से अपनी घर–गृहस्थी और कार्यस्थल के बीच सामंजस्य स्थापित करती है, इसे मैंने करीब से देखा है। अपनी कामकाजी बहनों, सखियों के अनुभवों से प्रेरित होकर मैं यह लेख लिख रही हूँ।

कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ –

आज अधिकतर महिलाएँ नौकरी कर रही है तथा आत्मनिर्भर बनी है। अपने घर–परिवार और नौकरी के बीच सामंजस्य बिठाती महिलाओं को लगता है कि इस 'आत्मनिर्भरता' ने उनकी कठिनाइयों को बढ़ा दिया है। वह पारिवारिक और अन्य प्रकार की हिंसा का शिकार हो रही है। कामकाजी महिलाओं की प्रमुख समस्याएँ हैं –

- कामकाजी महिलाओं को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है, एक परिवार की और दूसरी कार्यक्षेत्र की। परिवार वाले उनसे यह अपेक्षा रखते हैं कि वह घर का पूरा काम करने के बाद नौकरी भी करें। दोनों जगह पर संतुलन बनाने के फेर में आज कई कामकाजी महिलाएँ शारीरिक और मानसिक समस्याओं से गुजर रही हैं।
- संयुक्त परिवार में रहने वाली अधिकतर कामकाजी महिलाओं को पारिवारिक सहयोग तो कम मिलता है, बल्कि घर के आधे काम की हिस्सेदारी भी उनके नाम होती है। घर पर मामूली कामों के लिए भी उन्हें अवकाश लेने के लिए बाध्य किया जाता है, जिसका प्रभाव उनकी कार्य क्षमता पर पड़ता है। (अपवाद छोड़कर)
- आज भी कामकाजी महिलाओं को नौकरी के कारण घर से बाहर बिताने वाले समय का हिसाब देना पड़ता है। घरवाले यह अपेक्षा करते है कि वे नौकरी के लिए घर से जाये तो निर्धारित समय पर लौटकर आए। उन्हें अगर किसी कारणवश घर आने में देर हो जाती है तो उन्हें सफाई देनी पड़ती है– जैसे कोई अपराध किया हो।
- कामकाजी महिलाएं नौकरी के कारण अपने परिवार को आगे नहीं बढ़ा पाती, उन्हें लगता है कि शिशु आगमन से उनकी जिम्मेदारियाँ बढ़ जाएगी और उन्हें अपनी नौकरी छोड़नी पड़ेगी। क्योंकि हमारे समाज में बच्चों की परवरिश की जिम्मेदारी माँ पर होती है। माँ चाहे कितने ही बड़े पद पर क्यों न हो समझौता उसे ही करना होता है।
- कामकाजी महिला को मिलने वाले वेतन में व्यय, बचत या निवेश के निर्णय का अधिकार भी उन्हें नहीं बल्कि उनके पति को होता है। अधिकतर मामलों में उनका वेतन पति के हाथ में जाता है और उन्हें अपने व्यक्तिगत खर्च के लिए भी पति के सामने हाथ फैलाना पड़ता है।
- निम्न वर्ग की कामकाजी महिलाओं की स्थिति और भी दयनीय है। इस वर्ग की अधिकतर महिलाएँ अशिक्षित या अल्पशिक्षित होती हैं। घर के काम निपटा कर कार्यस्थल पर दिनभर मेहनत मजदूरी करके जब वह घर लौटती है तो उसे घर के काम के साथ–साथ पारिवारिक हिंसा से भी दो चार होना पड़ता है।

- कार्यस्थल पर भी उन्हें कभी–कभी भेदभाव और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। उन्हें कभी कार्यालय पहुंचने में देर हो जाती है तो अधिकारियों की डांट–फटकार सुनने को मिलती है। वहां भी उन्हें अनेक तरह के दबाव में काम करना पड़ता है और शोषण का शिकार होना पड़ता है।

घर–परिवार और कार्यस्थल में सामंजस्य बिठाती कामकाजी महिलाएँ –

कामकाजी महिलाएँ घरेलू कार्यों के साथ–साथ अपने कार्यालयीन दायित्वों का निर्वहन भी पूरे मन से करती है। कई समस्याओं के होते हुए भी वे अपने घर, परिवार और कामकाजी जीवन के बीच सामंजस्य बिठाने की पूरी कोशिश करती है।

- आज कई महिलाएँ अपने परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं का ध्यान रखने के साथ–साथ अपने कार्यालय की जिम्मेदारियों को भी बखूबी निभा रही हैं। इन महिलाओं के कामकाजी और घरेलू जीवन में तालमेल की वजह है इनकी व्यवस्थित दिनचर्या। ये महिलाएँ घड़ी की तरह से जीवन को चलाती हैं जिससे वे हर काम को तय समय पर पूरा कर पाती है।
- ये महिलाएँ घर के कामों को परिवार के सदस्यों की मदद से पूरा करती है। वे बच्चों को छोटी उम्र से ही अपने काम खुद करने की आदतें सिखाती है। साथ ही अपनी समस्याओं के बारे में भी परिवार के सदस्यों के साथ बात करके उनका हल निकालती है।
- कुछ महिलाएँ ऐसी कंपनियों में काम करना पसंद करती है जहाँ कार्यालय का समय थोड़ा लचीला हो। अगर किसी कारणवश जैसे बच्चों के बीमार होने पर, बच्चों के स्कूल में मीटिंग होने पर या अन्य किसी कारण से वे थोड़ा लेट हो जाती हैं तो वह बाद में ऑफिस में ज्यादा रूककर अपना काम पूरा कर लेती हैं और उन्हें छोटे–छोटे कामों के लिए अवकाश भी नहीं लेना पड़ता है।
- आजकल अधिकतर कंपनियां घर से काम करने की सुविधा भी देती है। जिन महिलाओं के बच्चे छोटे हैं या जो बीमारी या अन्य किसी कारणवश ऑफिस नहीं जा पाती, वे ऑफिस का काम घर से ही कर लेती है। इस तरह से उनका काम भी पूरा हो जाता है और वे अपना तथा बच्चों का ध्यान भी रख पाती हैं।

प्रत्येक कामकाजी महिला का घरेलू जीवन दयनीय होता है यह अवधारणा पूर्णतः सत्य नहीं है। आज भारतीय महिला सजगता और जिम्मेदारी से कार्यालय और घर दोनों के कार्यों को संभाले हुए है। घर को चलाने, पति के भार को कम करने और सुख–सुविधाओं से संपन्न जीवन जीने के प्रति कामकाजी महिलाओं के प्रयत्न स्तुत्य हैं।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि कामकाजी महिलाओं की एक नई छवि उभर रही है। आज जीवन के हर क्षेत्र में महिलाएँ अपनी योग्यता और क्षमता का परिचय दे रही है। यदि परिवार के सदस्य अपना पूरा सहयोग दें तो महिलाओं के विकास की धारा अनवरत चलती रहेगी। तभी एक स्वस्थ समाज और सुखी परिवार का सपना साकार हो सकेगा।

– श्रीमती निर्मला न्याती
मंदसौर (पश्चिमी मध्यप्रदेश)
मोबा. 9407210718